IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मौलाना मजहरूल हक और बिहार में हिंदू-मुस्लिम एकता

खुशबू कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, बी ० आर ० अंबेडकर बिहार विश्व विधालय , मुज़फरपुर डॉ राजू रंजन प्रसाद, शोध निदेशक, सहायक प्रोफेसर, आर ० एन ० कॉलेज साहेबगंज मुज़फरपुर,

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रश्न केवल राजनीतिक गठबंधन का विषय नहीं था, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की प्रकृति और उसकी सामाजिक आधारभूमि से जुड़ा एक केंद्रीय प्रश्न था। बिहार के संदर्भ में मौलाना मजहरूल हक इस प्रश्न के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधियों में से एक थे। वे एक ऐसे मुस्लिम राष्ट्रवादी नेता थे जिन्होंने धार्मिक पहचान और भारतीय राष्ट्रवाद के बीच किसी अनिवार्य विरोध को स्वीकार नहीं किया। उनके राजनीतिक जीवन में इस विचार का निरंतर विकास दिखाई देता है कि भारत की स्वतंत्रता, सामाजिक पुनर्निर्माण और लोकतांत्रिक भविष्य हिंदू-मुस्लिम सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता। मुस्लिम लीग से उनके प्रारंभिक संबंध, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उनकी सक्रिय भूमिका, चंपारण आंदोलन में महात्मा गांधी को दिया गया सहयोग, खिलाफत और असहयोग आंदोलन में उनकी भागीदारी तथा सदाकत आश्रम और बिहार विद्यापीठ की स्थापना—इन सभी कार्यों को हिंदू-मुस्लिम एकता की उनकी व्यापक राजनीतिक अवधारणा के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

यह शोध-पत्र मौलाना मजहरूल हक की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन करते हुए यह तर्क प्रस्तुत करता है कि उनकी हिंदू-मुस्लिम एकता की अवधारणा केवल "सांप्रदायिक सद्भाव" तक सीमित नहीं थी। वह एक प्रकार की **संयुक्त राष्ट्रवादी राजनीति** थी, जिसमें धार्मिक समुदायों की विशिष्टताओं को स्वीकार करते हुए उन्हें औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध साझा राजनीतिक संघर्ष में संगठित करने का प्रयास किया गया। बिहार की सामाजिक संरचना, औपनिवेशिक राजनीति, खिलाफत-असहयोग आंदोलन और बाद के सांप्रदायिक तनावों के संदर्भ में मौलाना मजहरूल हक की भूमिका का विश्लेषण यह भी दिखाता है कि हिंदू-मुस्लिम एकता केवल नेताओं के नैतिक आह्वान से स्थायी नहीं बन सकती; इसके लिए सामाजिक समानता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और संस्थागत विश्वास आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द: मौलाना मजहरूल हक, बिहार, हिंदू-मुस्लिम एकता, संयुक्त राष्ट्रवाद, खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, चंपारण, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास राष्ट्रवाद और सांप्रदायिकता के बीच लगातार चलने वाले संघर्ष का इतिहास भी है। एक ओर औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध ऐसी राजनीति विकसित हुई जिसने भारत की विविध धार्मिक, भाषाई और सामाजिक समुदायों को एक साझा राजनीतिक समुदाय के रूप में संगठित करने का प्रयास किया; दूसरी ओर प्रतिनिधित्व, धार्मिक पहचान और राजनीतिक शक्ति के प्रश्नों ने ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कीं जिनमें समुदाय-आधारित राजनीति मजबूत होती गई। हिंदू-मुस्लिम संबंधों का प्रश्न इसी व्यापक ऐतिहासिक तनाव के केंद्र में था।

बिहार में मौलाना मजहरूल हक का राजनीतिक जीवन इस संघर्ष को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे केवल एक मुस्लिम नेता नहीं थे और न ही उनकी भूमिका को केवल खिलाफत आंदोलन या असहयोग आंदोलन तक सीमित किया जा सकता है। उनका राजनीतिक व्यक्तित्व भारतीय राष्ट्रवाद की उस धारा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें धार्मिक आस्था और राष्ट्रीय निष्ठा को परस्पर विरोधी नहीं माना गया। उनके लिए मुसलमान होना भारतीय होने की पहचान को कम नहीं करता था और भारतीय राष्ट्रवाद किसी एक धार्मिक समुदाय की राजनीतिक संपत्ति नहीं था।

मजहरूल हक का महत्व इस तथ्य से भी बढ़ जाता है कि उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन के विभिन्न चरणों में अलग-अलग संगठनों और राजनीतिक मंचों के माध्यम से कार्य किया। मुस्लिम लीग से उनका प्रारंभिक संबंध और बाद में कांग्रेस तथा गांधीवादी जन-आंदोलन से उनका जुड़ाव सतही दृष्टि से विरोधाभासी प्रतीत हो सकता है। किंतु इस परिवर्तन को केवल "राजनीतिक पक्ष परिवर्तन" के रूप में देखना ऐतिहासिक रूप से अपर्याप्त होगा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में मुस्लिम राजनीति स्वयं एकरूप नहीं थी। अनेक मुस्लिम नेता ऐसे थे जो मुस्लिम समाज के राजनीतिक अधिकारों की चिंता करते हुए भी भारतीय राष्ट्रवाद और हिंदू-मुस्लिम सहयोग के समर्थक थे। बिहार के संदर्भ में मजहरूल हक इसी संयुक्त राष्ट्रवादी परंपरा के महत्वपूर्ण प्रतिनिधि थे (Ahmad & Jha, 1976; Ghosh, 1991)।

इस शोध-पत्र का केंद्रीय तर्क है कि मौलाना मजहरूल हक की हिंदू-मुस्लिम एकता की अवधारणा को केवल नैतिक सद्भाव की भाषा में समझना पर्याप्त नहीं है। उनकी राजनीति का आधार तीन परस्पर जुड़े हुए तत्वों में था—औपनिवेशिक सत्ता-विरोध, संयुक्त राष्ट्रवाद और जन-आधारित राजनीतिक संगठन। यही कारण है कि चंपारण से लेकर असहयोग आंदोलन तक उनकी भूमिका ने बिहार में एक ऐसे राजनीतिक वातावरण के निर्माण में योगदान दिया जिसमें धार्मिक पहचान से ऊपर उठकर साझा संघर्ष की कल्पना संभव हो सकी।

मौलाना मजहरूल हक: व्यक्तित्व और राजनीतिक निर्माण

मौलाना मजहरूल हक का जन्म 22 दिसंबर 1866 को बिहार के पटना जिले के बहपुरा/ब्रह्मपुर क्षेत्र में हुआ। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त की और कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए। इंग्लैंड में उनके अनुभवों का उनके राजनीतिक व्यक्तित्व के निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। वहीं उनकी महात्मा गांधी से परिचय और मित्रता भी हुई, जो बाद के वर्षों में भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण संबंध के रूप में सामने आई। भारत लौटने के बाद उन्होंने कानून के क्षेत्र में कार्य किया और धीरे-धीरे सार्वजनिक तथा राजनीतिक जीवन में सक्रिय हुए (Ahmad & Jha, 1976)।

मजहरूल हक का प्रारंभिक राजनीतिक जीवन उस दौर का प्रतिनिधित्व करता है जब भारतीय राष्ट्रवाद और समुदाय-आधारित राजनीतिक संगठनों के बीच स्पष्ट और स्थायी विभाजन अभी विकसित नहीं हुआ था। वे मुस्लिम लीग के प्रारंभिक चरण से जुड़े रहे और बिहार में उसके संगठनात्मक विकास में भी भूमिका निभाई। किंतु इसे उनके राष्ट्रवाद-विरोधी होने का प्रमाण नहीं माना जा सकता। उस समय मुस्लिम समाज के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और भारतीय राष्ट्रवाद के प्रश्नों को अनेक नेता एक साथ देखने का प्रयास कर रहे थे।

यहीं मजहरूल हक की राजनीति की जटिलता दिखाई देती है। वे मुस्लिम समाज की राजनीतिक चिंताओं से परिचित थे, किंतु उनका अंतिम राजनीतिक दृष्टिकोण धार्मिक पृथकतावाद पर आधारित नहीं था। उनका विश्वास था कि भारत की विभिन्न धार्मिक समुदायों के हितों को औपनिवेशिक शासन से अलग करके नहीं समझा जा सकता। औपनिवेशिक सत्ता की संरचना ही ऐसी थी जिसमें समुदायों के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने की क्षमता थी।

बिहार में उनका राजनीतिक विकास इसीलिए महत्वपूर्ण है कि उन्होंने मुस्लिम पहचान को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर सक्रिय राजनीतिक भागीदारी का आधार बनाया, न कि राष्ट्रीय राजनीति से अलगाव का। यह दृष्टिकोण बाद के दशकों में "संयुक्त" या "समावेशी राष्ट्रवाद" की विचारधारा के रूप में अधिक स्पष्ट हुआ।

बिहार की सामाजिक संरचना और हिंदू-मुस्लिम एकता की चुनौती

मौलाना मजहरूल हक की भूमिका को समझने के लिए बिहार की सामाजिक संरचना का विश्लेषण आवश्यक है। बिहार औपनिवेशिक काल में केवल धार्मिक विविधता वाला क्षेत्र नहीं था; यह जाति, भूमि-संबंधों, जमींदारी व्यवस्था और आर्थिक असमानता से विभाजित समाज था। हिंदू-मुस्लिम संबंध भी इन्हीं व्यापक सामाजिक संरचनाओं से प्रभावित होते थे।

सांप्रदायिक संबंधों को केवल धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर समझना इस सामाजिक वास्तविकता को अनदेखा करना होगा। ग्रामीण बिहार में हिंदू और मुसलमानों के बीच सहयोग, आर्थिक साझेदारी और सांस्कृतिक संपर्क मौजूद थे, किंतु भूमि, सत्ता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़े संघर्ष भी थे। कई स्थानों पर धार्मिक पहचान राजनीतिक संघर्ष की भाषा बन सकती थी, जबकि वास्तविक संघर्ष आर्थिक या सामाजिक शक्ति के वितरण से संबंधित होता था।

औपनिवेशिक शासन ने प्रशासनिक वर्गीकरण, जनगणना, पृथक राजनीतिक प्रतिनिधित्व और समुदाय-आधारित राजनीतिक विमर्श के माध्यम से धार्मिक पहचान को सार्वजनिक राजनीति का महत्वपूर्ण आधार बनाया। इसका अर्थ यह नहीं कि सांप्रदायिकता केवल ब्रिटिश नीति की कृत्रिम उपज थी। स्थानीय सामाजिक तनाव और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा भी महत्वपूर्ण थे। किंतु औपनिवेशिक शासन ने इन तनावों को एक विशिष्ट राजनीतिक ढांचे में संगठित किया।

मजहरूल हक की राजनीति इसी जटिल परिस्थिति में विकसित हुई। उनकी हिंदू-मुस्लिम एकता की अवधारणा धार्मिक मतभेदों के अस्तित्व से इनकार नहीं करती थी। इसके बजाय वह इस बात पर बल देती थी कि धार्मिक भिन्नता को राजनीतिक शत्रुता का आधार नहीं बनने दिया जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण आधुनिक भारत के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि सांप्रदायिक सद्भाव का वास्तविक अर्थ धार्मिक भिन्नताओं को मिटाना नहीं, बल्कि भिन्नताओं के बावजूद समान नागरिक और राजनीतिक साझेदारी स्थापित करना है।

कांग्रेस, मुस्लिम राजनीति और संयुक्त राष्ट्रवाद

मौलाना मजहरूल हक के राजनीतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम राजनीतिक संगठनों के बीच उनकी भूमिका है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में भारतीय राजनीति आज की तरह कठोर वैचारिक विभाजनों में विभाजित नहीं थी। अनेक नेता विभिन्न राजनीतिक मंचों पर सक्रिय थे।

मजहरूल हक कांग्रेस के साथ सक्रिय रूप से जुड़े और बिहार की प्रांतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका राजनीतिक दृष्टिकोण धीरे-धीरे इस विचार की ओर विकसित हुआ कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का आधार व्यापक जन-एकता होना चाहिए। इस संदर्भ में हिंदू-मुस्लिम एकता उनके लिए केवल कांग्रेस की रणनीतिक आवश्यकता नहीं थी, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की वैधता की शर्त थी।

यदि भारत को एक राजनीतिक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र होना था, तो यह आवश्यक था कि राष्ट्र की अवधारणा किसी एक धार्मिक समुदाय पर आधारित न हो। मजहरूल हक का योगदान इसी बौद्धिक और राजनीतिक दिशा में था। उन्होंने

मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया और साथ ही हिंदू नेतृत्व को यह संदेश दिया कि राष्ट्रवाद की विश्वसनीयता उसके समावेशी चरित्र पर निर्भर करती है।

बिहार के इतिहास में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकि बाद के वर्षों में मुस्लिम राजनीतिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न अधिक जटिल होता गया। इतिहासकार पपीया घोष ने बिहार की राजनीति में "कांग्रेस मुस्लिम" की स्थिति और मुस्लिम राजनीतिक प्रतिनिधित्व की जटिलताओं को रेखांकित किया है (Ghosh, 1991)। इस संदर्भ में मजहरूल हक का राजनीतिक जीवन उस दौर का प्रतिनिधित्व करता है जब मुस्लिम राष्ट्रवादी नेतृत्व कांग्रेस और व्यापक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के भीतर प्रभावशाली भूमिका निभा रहा था।

चंपारण आंदोलन और साझा राजनीतिक संघर्ष की अवधारणा

मौलाना मजहरूल हक और हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रश्न में चंपारण आंदोलन का विशेष महत्व है। 1917 में महात्मा गांधी के बिहार आगमन के समय मजहरूल हक ने उनका सहयोग किया। गांधी के समकालीन विवरणों से यह स्पष्ट है कि पटना पहुंचने पर गांधी को मजहरूल हक ने अपने यहां स्थान दिया और उनके चंपारण अभियान के प्रति सहयोगात्मक रवैया अपनाया (Gandhi, 1958/2011)।

यह घटना केवल व्यक्तिगत मित्रता का उदाहरण नहीं थी। चंपारण आंदोलन ने बिहार की राजनीति में एक नए प्रकार की जन-राजनीति को जन्म दिया। नील की खेती से जुड़े किसानों का संघर्ष धार्मिक पहचान पर आधारित नहीं था। हिंदू और मुसलमान दोनों किसान औपनिवेशिक नील व्यवस्था और यूरोपीय बागान मालिकों के शोषण से प्रभावित थे। इसीलिए चंपारण संघर्ष ने यह संभावना प्रस्तुत की कि साझा आर्थिक और राजनीतिक हित धार्मिक विभाजनों को पार कर सकते हैं।

मजहरूल हक ने गांधी के साथ सहयोग करके वस्तुतः उस विचार को मजबूत किया कि राष्ट्रीय आंदोलन की वास्तविक शक्ति जनता के साझा अनुभवों में निहित है। हिंदू-मुस्लिम एकता केवल नेताओं द्वारा मंच से घोषित की जाने वाली अवधारणा नहीं हो सकती थी; उसे साझा संघर्षों और संस्थाओं में अभिव्यक्त होना आवश्यक था।

चंपारण आंदोलन का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि उसने बिहार के स्थानीय नेतृत्व को राष्ट्रीय राजनीति से जोड़ा। राजेंद्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद और अन्य नेताओं के साथ मजहरूल हक की भागीदारी ने विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के नेताओं को एक साझा राजनीतिक उद्देश्य में संगठित किया। यही अनुभव बाद में असहयोग आंदोलन के दौरान अधिक व्यापक रूप में दिखाई दिया।

खिलाफत और असहयोग आंदोलन: एकता का राजनीतिक शिखर

मौलाना मजहरूल हक की हिंदू-मुस्लिम एकता की राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण चरण खिलाफत और असहयोग आंदोलन था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद तुर्की और खिलाफत के प्रश्न ने भारतीय मुसलमानों के बीच व्यापक राजनीतिक असंतोष उत्पन्न किया। गांधी ने इस मुद्दे को औपनिवेशिक विरोधी असहयोग आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया।

यह गठबंधन भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण था। पहली बार बड़ी संख्या में हिंदू और मुसलमान एक साझा राजनीतिक आंदोलन के अंतर्गत संगठित हुए। बिहार में मजहरूल हक इस प्रक्रिया के प्रमुख नेताओं में से थे। उन्होंने खिलाफत के प्रश्न को केवल धार्मिक भावना के स्तर पर नहीं रखा, बल्कि उसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नैतिक और राजनीतिक आलोचना से जोड़ा।

उनकी राजनीतिक दृष्टि का सार इस विचार में देखा जा सकता है कि कोई व्यक्ति एक साथ धार्मिक रूप से मुसलमान और राजनीतिक रूप से भारतीय राष्ट्रवादी हो सकता है। यह विचार उस समय अत्यंत महत्वपूर्ण था जब औपनिवेशिक राजनीति धार्मिक समुदायों को अलग-अलग राजनीतिक इकाइयों के रूप में प्रस्तुत करने लगी थी।

मजहरूल हक ने असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी संस्थाओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वदेशी राजनीतिक संगठन पर बल दिया। उनके लिए आंदोलन का उद्देश्य केवल ब्रिटिश शासन को चुनौती देना नहीं था; वह भारतीय समाज में नई राजनीतिक नैतिकता विकसित करना भी था। इसी संदर्भ में उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा और संस्थान निर्माण को महत्वपूर्ण माना।

उनकी गतिविधियों में हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रश्न केंद्रीय था। एकता का अर्थ किसी समुदाय से उसकी धार्मिक पहचान छोड़ने की अपेक्षा नहीं था। इसके विपरीत, खिलाफत-असहयोग आंदोलन ने धार्मिक पहचान को साझा औपनिवेशिक विरोध की राजनीति से जोड़ने का प्रयास किया। यही इस आंदोलन की शक्ति भी थी और इसकी ऐतिहासिक सीमा भी।

सदाकत आश्रम: एकता का संस्थागत रूप

मौलाना मजहरूल हक की सबसे स्थायी विरासतों में सदाकत आश्रम का विशेष स्थान है। 1920 के असहयोग आंदोलन के दौरान स्थापित यह आश्रम शीघ्र ही बिहार में राष्ट्रीय गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। गांधीजी से जुड़े राष्ट्रीय शिक्षा और राजनीतिक प्रशिक्षण के प्रयासों में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। बिहार विद्यापीठ भी इसी व्यापक राष्ट्रीय शैक्षिक आंदोलन से जुड़ा था (Gandhi Heritage Portal, n.d.; Government of Bihar, n.d.)।

सदाकत आश्रम को केवल एक भवन या राजनीतिक केंद्र के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह उस वैकल्पिक राजनीतिक संस्कृति का प्रतीक था जिसे औपनिवेशिक संस्थाओं के बाहर विकसित करने का प्रयास किया जा रहा था। सरकारी शिक्षा, प्रशासन और राजनीतिक संरचनाओं के विकल्प के रूप में राष्ट्रीय संस्थान बनाना असहयोग आंदोलन की केंद्रीय रणनीति थी।

मजहरूल हक के लिए संस्थान निर्माण का प्रश्न हिंदू-मुस्लिम एकता से भी जुड़ा था। साझा संस्थाएँ साझा राजनीतिक संस्कृति विकसित करती हैं। यदि विभिन्न समुदाय केवल अपने-अपने पृथक सामाजिक और शैक्षिक संस्थानों में संगठित हों, तो राष्ट्रीय एकता का विचार कमजोर पड़ सकता है। इसके विपरीत, राष्ट्रीय संस्थान विविध समुदायों के बीच संवाद और साझेदारी का अवसर प्रदान करते हैं।

यहीं मजहरूल हक की राजनीति की दूरदर्शिता दिखाई देती है। उन्होंने केवल भाषणों में एकता की बात नहीं की; उन्होंने ऐसी संस्थाओं के निर्माण में योगदान दिया जिनके माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को सामाजिक आधार प्राप्त हुआ।

मजहरूल हक की एकता की अवधारणा: नैतिकता से आगे

मौलाना मजहरूल हक को केवल "सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक" के रूप में प्रस्तुत करना उनके राजनीतिक योगदान को सीमित कर देता है। उनका विचार इससे अधिक व्यापक था। उनकी हिंदू-मुस्लिम एकता की अवधारणा में तीन प्रमुख तत्व दिखाई देते हैं।

पहला, **राजनीतिक समानता**। किसी भी समुदाय को राष्ट्र की राजनीति में गौण नहीं माना जा सकता। संयुक्त राष्ट्रवाद तभी टिकाऊ हो सकता है जब सभी समुदायों को सम्मानजनक राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्राप्त हो।

दूसरा, **औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध साझा संघर्ष**। मजहरूल हक समझते थे कि ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष धार्मिक समुदायों के अलग-अलग आंदोलनों के रूप में सफल नहीं हो सकता। स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनाधार चाहिए था।

तीसरा, **नैतिक राष्ट्रवाद**। उनके लिए राष्ट्रीय राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं थी। उसमें सामाजिक जिम्मेदारी, पारस्परिक सम्मान और सार्वजनिक नैतिकता का स्थान था।

फिर भी उनकी राजनीति की आलोचनात्मक समीक्षा आवश्यक है। हिंदू-मुस्लिम एकता का राष्ट्रीय आंदोलन में बार-बार आह्वान किया गया, किंतु सामाजिक स्तर पर मौजूद असमानताओं को हमेशा पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं किया गया। जाति, भूमि-संबंध, आर्थिक असमानता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के प्रश्न कई बार धार्मिक एकता के आदर्शवादी विमर्श के पीछे छिप गए।

मजहरूल हक की राजनीति इन सीमाओं से पूर्णतः मुक्त नहीं थी। किंतु उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने सांप्रदायिक पहचान को राजनीतिक अलगाव का आधार बनाने से इनकार किया। यह उनके समय की परिस्थितियों में एक महत्वपूर्ण वैचारिक हस्तक्षेप था।

बिहार में सांप्रदायिक राजनीति का उदय और एकता की सीमाएँ

मजहरूल हक के जीवनकाल में हिंदू-मुस्लिम एकता का विचार राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति बना। किंतु उनकी मृत्यु के बाद भारतीय राजनीति में सांप्रदायिक तनाव अधिक तीव्र होते गए। बिहार भी इस प्रक्रिया से अलग नहीं रहा।

1930 और 1940 के दशकों में राजनीतिक प्रतिनिधित्व, चुनावी प्रतिस्पर्धा और सांप्रदायिक संगठनों की बढ़ती गतिविधियों ने धार्मिक पहचान को अधिक स्पष्ट राजनीतिक स्वरूप दिया। कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादी राजनीति के बावजूद मुस्लिम समाज के सभी वर्ग कांग्रेस के साथ समान रूप से नहीं जुड़े। इसी प्रकार हिंदू समाज भी किसी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व नहीं करता था।

बाद के वर्षों में बिहार में सांप्रदायिक तनावों और 1946 की हिंसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि राजनीतिक एकता का निर्माण कितना कठिन और अस्थायी हो सकता है। समकालीन इतिहासलेखन ने यह रेखांकित किया है कि बिहार में 1930 के दशक के अंत और 1940 के दशक में सांप्रदायिक तनावों के पीछे केवल धार्मिक वैचारिक संघर्ष नहीं थे, बल्कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और सामाजिक संरचनाएँ भी महत्वपूर्ण थीं (Dubey, 2020)।

इस दृष्टि से मजहरूल हक की विरासत को एक चेतावनी के रूप में भी देखा जाना चाहिए। हिंदू-मुस्लिम एकता केवल संकट के समय बनने वाला राजनीतिक गठबंधन नहीं हो सकती। यदि समाज में राजनीतिक प्रतिनिधित्व, आर्थिक न्याय और नागरिक समानता के प्रश्नों को लगातार संबोधित नहीं किया जाता, तो सांप्रदायिक राजनीति पुनः उभर सकती है।

बिहार के मुस्लिम राष्ट्रवादी नेतृत्व के इतिहास से यह भी स्पष्ट होता है कि मुस्लिम समाज को कभी एकसमान राजनीतिक समुदाय के रूप में नहीं देखा जा सकता। अनेक मुस्लिम संगठन और नेता धार्मिक पृथकतावाद के विरोधी रहे और संयुक्त भारतीय राष्ट्रवाद के समर्थक थे (Ghosh, 1991)। बाद के इतिहास में इन आवाज़ों को पर्याप्त महत्व न मिलना भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहासलेखन की एक सीमा रही है।

मौलाना मजहरूल हक की राजनीतिक विरासत

मौलाना मजहरूल हक की विरासत को तीन स्तरों पर समझा जा सकता है—राष्ट्रीय आंदोलन, बिहार की राजनीतिक संस्कृति और समकालीन भारत।

राष्ट्रीय आंदोलन के स्तर पर वे उन मुस्लिम नेताओं में थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्रवाद को मजबूत किया। उनका जीवन इस सरल लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य को स्थापित करता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक संरचना बहुधार्मिक थी। इसे किसी एक समुदाय की राजनीतिक परियोजना के रूप में देखना ऐतिहासिक रूप से गलत होगा।

बिहार की राजनीतिक संस्कृति में उनकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने गांधी, राजेंद्र प्रसाद और अन्य नेताओं के साथ मिलकर ऐसी राजनीतिक परंपरा को मजबूत किया जिसमें सहयोग और संवाद को संघर्ष की शक्ति माना गया। सदाकत आश्रम जैसी संस्थाएँ इस विरासत की ठोस अभिव्यक्ति हैं।

समकालीन भारत के संदर्भ में उनका महत्व और बढ़ जाता है। आज हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर चर्चा अक्सर सांस्कृतिक प्रतीकों और राजनीतिक आरोपों तक सीमित हो जाती है। मजहरूल हक की राजनीति इस बहस को अधिक गंभीर दिशा प्रदान करती है। वह यह प्रश्न उठाती है कि क्या विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच वास्तविक राजनीतिक साझेदारी केवल सहिष्णुता से संभव है, या उसके लिए समान नागरिकता और संस्थागत न्याय भी आवश्यक है।

उनकी विरासत का सबसे महत्वपूर्ण संदेश संभवतः यही है कि एकता का अर्थ एकरूपता नहीं है। हिंदू और मुसलमान अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के साथ भी एक साझा राजनीतिक समुदाय का निर्माण कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्रवाद का अर्थ धार्मिक पहचान का उन्मूलन नहीं, बल्कि राजनीतिक समानता के आधार पर सह-अस्तित्व है।

निष्कर्ष

मौलाना मजहरूल हक का जीवन भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में हिंदू-मुस्लिम एकता की संभावनाओं और सीमाओं दोनों को समझने का अवसर प्रदान करता है। वे ऐसे समय में सक्रिय थे जब भारतीय राजनीति धार्मिक समुदायों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और राष्ट्रीय एकता के बीच संतुलन खोज रही थी। मुस्लिम लीग से उनके प्रारंभिक संबंध और बाद में कांग्रेस तथा गांधीवादी आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका यह दर्शाती है कि भारतीय मुस्लिम राजनीति को किसी एकरेखीय "राष्ट्रवादी बनाम सांप्रदायिक" विभाजन में नहीं समझा जा सकता।

उनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उन्होंने मुस्लिम पहचान और भारतीय राष्ट्रवाद के बीच विरोध की धारणा को चुनौती दी। चंपारण आंदोलन में गांधी का सहयोग, खिलाफत-असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका, हिंदू-मुस्लिम सहयोग पर निरंतर बल और सदाकत आश्रम जैसे संस्थानों की स्थापना ने इस विचार को व्यवहारिक राजनीतिक रूप दिया।

फिर भी उनकी राजनीति की ऐतिहासिक सीमा को स्वीकार करना आवश्यक है। हिंदू-मुस्लिम एकता के राष्ट्रीय आंदोलन के आदर्श के बावजूद भारतीय समाज में जाति, वर्ग, आर्थिक असमानता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की समस्याएँ बनी रहीं। केवल राष्ट्रीय नेतृत्व की सद्भावना इन संरचनात्मक प्रश्नों को समाप्त नहीं कर सकती थी। यही कारण है कि असहयोग आंदोलन के बाद हिंदू-मुस्लिम एकता कमजोर हुई और अगले दशकों में सांप्रदायिक राजनीति अधिक प्रभावशाली बनी।

इसलिए मौलाना मजहरूल हक की विरासत को केवल अतीत की स्मृति के रूप में नहीं देखना चाहिए। उनकी राजनीति हमें यह समझने में सहायता करती है कि बहुधार्मिक समाज में राष्ट्रीय एकता किसी समुदाय की सांस्कृतिक प्रधानता से नहीं, बल्कि समान नागरिकता, राजनीतिक साझेदारी और पारस्परिक सम्मान से निर्मित होती है।

बिहार के इतिहास में उनका योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठाकर जन-आधारित राजनीतिक आंदोलन के रूप में विकसित करने में योगदान दिया। उनका जीवन यह प्रमाणित करता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे रचनात्मक परंपराएँ वे थीं जिन्होंने विविधता को राष्ट्र की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी राजनीतिक शक्ति माना।

अंततः, मौलाना मजहरूल हक की हिंदू-मुस्लिम एकता की अवधारणा का सबसे स्थायी महत्व इस बात में है कि वह हमें राष्ट्रवाद को बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक पहचान के संदर्भ में नहीं, बल्कि साझा राजनीतिक जिम्मेदारी के रूप में देखने की प्रेरणा देती है। बिहार के राजनीतिक इतिहास में उनका स्थान इसी कारण केवल एक स्वतंत्रता सेनानी का नहीं, बल्कि संयुक्त भारतीय राष्ट्रवाद के एक महत्वपूर्ण वैचारिक प्रतिनिधि का है।

संदर्भ सूची

1. Ahmad, Q., & Jha, J. S. (1976). *Mazharul Haque*. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
2. Dubey, I. (2020). Between 'everyday' and 'extraordinary': Partition, violence and the communal riots of 1946 in Bihar. *Journal of the Royal Asiatic Society, 30*(2), 283–312. https://doi.org/10.1017/S1356186319000488
3. Gandhi, M. K. (2011). *Mahatma: Volume 1, 1869–1920*. Gandhi Heritage Portal. (Original work published in the twentieth century)
4. Gandhi Heritage Portal. (n.d.). *Sadaqat Ashram, Patna*. Gandhi Heritage Portal.
5. Ghosh, P. (1991). The making of the Congress Muslim stereotype: Bihar, 1937–39. *Indian Economic & Social History Review, 28*(4), 449–470. https://doi.org/10.1177/001946469102800404
6. Government of Bihar, District Siwan. (n.d.). *Maulana Mazharul Haque*. District Administration, Siwan.
7. Jaiswal, A. (n.d.). Mazharul Haque—His role in the non-cooperation movement in Bihar. *Think India Journal*.
8. Sundarayya, P. (1972). *Telangana people's struggle and its lessons*. Communist Party of India (Marxist).